



मरुमेघ

किसान ई पत्रिका

www.marumegh.com पर ऑनलाईन उपलब्ध



ISSN : 2456-2904
© marumegh 2022

आलेख प्राप्ति : 05-04-2022

स्वीकरण : 04-04-2022

हरी खाद से मृदा को सुधारें

¹राजीव परिहार व ²ओम प्रकाश प्रजापत

¹एम.एस.सी. शस्य विज्ञान एवं ²पी.एच.डी. शस्य विज्ञान
सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज उत्तर प्रदेश

*ई-मेल:—rparihar54@gmail.com

निरन्तर फसलें उगाने एवं असंतुलित उर्वरकों के उपयोग से हमारी मृदाओं में जीवांश तत्व एवं सूक्ष्म पोषक तत्व की कमी हो गई है। ऐसी स्थिति में हरी खाद का उपयोग करना सस्ता और सरल तरीका है जिसे किसान भाई आसानी से कर सकते हैं। हरी खाद एक जैविक खाद है जिसमें फसल को हरी अवस्था में पकने से पहले जुताई कर पौधे को मिट्टी में मिला देते हैं, जो जमीन में सड़कर जीवांश और पोषक तत्व पैदा करता है। हरी खाद में जितना अधिक पत्तियाँ एवं शाखायें (हरा तत्व) फसल से मृदा को मिलेगा उतना ही लाभकारी होगा। इसलिये हरी खाद की खड़ी फसल पर जल विलेय उर्वरक यूरिया, फॉस्फेट 17-44 व NPK 18-18-18 छिड़काव करेंगे तो उसकी बढ़वार अधिक होगी जिससे कम समय में अधिक बायोमांश (हरा पदार्थ) प्राप्त होगा।



हरी खाद की फसलों के गुण –

- ✓ फसल शीघ्र अंकुरण एवं बढ़वार वाली होना आवश्यक है जो खरपतवारों से प्रतिस्पर्धा कर उनको नियंत्रण करें।
- ✓ फसल में हरी पत्तियाँ एवं शाखायें अधिक हों तथा मुलायम हो जो मिट्टी में शीघ्रता से सड़ गल जाये।
- ✓ फसल ऐसी हो जिसके लिये अधिक खेत की तैयारी न करना पड़े एवं सभी प्रकार की जमीन में हो सके।
- ✓ फसल सूखा एवं अधिक पानी सहन करने की क्षमता रखती हो।
- ✓ फसल (दो दाल वाली) दलहनी हो जो पत्तियों एवं शाखाओं के अलावा जड़ ग्रंथियों में अधिक नत्रजन एकत्रित करें।
- ✓ फसल का बीज आसानी से मिल सके तथा अधिक बीज उत्पाद करने वाली हो।
- ✓ फसल ऐसी हो जो फसल चक्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हो।
- ✓ शीघ्र सड़ने वाली एवं शीघ्र पोषक तत्व प्रदान करने वाली फसल हों।
- ✓ फसल ऐसी हो जिसमें कीड़े बीमारी नहीं लगते हों।
- ✓ उपरोक्त गुणों वाली फसल सनई, ढेंचा, मूंग एवं उड़द आदि मुख्य फसलें हैं जिनका उपयोग हरी खाद के लिये लाभकारी होता है सनई व ढेंचा का बुवाई समय जून-जुलाई सर्वोत्तम है बुवाई में सनई का बीज 50-60 किलोग्राम तथा ढेंचा का बीज 30-40 किलोग्राम प्रति हेक्टर पर्याप्त होता है।
- ✓ जिन खेतों में धान की फसल रोपाई करना है या सब्जी उगाना है जून-जुलाई में सनई एवं ढेंचा की बुवाई कर दें जब आपकी धान की नर्सरी तैयार होगी तब तक हरी खाद फसल तैयार हो जायेगी इसके बाद सनई रोटावेटर चलाकर खेत में मिला दें उसके बाद रोपाई के लिये खेत तैयार करें।

हरी खाद से लाभ –

- ✓ मिट्टी में जीवांश तत्व बढ़ता है जिससे मिट्टी की उर्वरता में बढ़ोतरी होती है।
- ✓ मिट्टी में जीवांश पदार्थ बढ़ने से मृदा का भौतिक व रसायनिक दशा में सुधार होता है जिससे जल धारण क्षमता और वायु संचार अच्छा हो जाता है।
- ✓ हरी खाद से नत्रजन प्रचुर मात्रा में तथा अन्य पोषक तत्व मिट्टी में उपलब्ध हो जाते हैं जिनमें पौधे द्वारा आसानी से ग्रहण किया जाता है।
- ✓ हरी खाद की फसल अंकुरण एवं बढ़वार शीघ्र होती है जिससे खरपतवार नियंत्रण भी हो जाता है।
- ✓ खेत में जीवांश अधिक होने से लाभकारी कीट जैसे केंचुआ अधिक पनपते हैं क्योंकि उनका भोजन व आश्रय उपलब्ध होता है।
- ✓ मिट्टी की जलधारण क्षमता बढ़ने से फसल को लम्बे समय तक जल उपलब्धता उत्पादन बढ़ता है।
- ✓ मिट्टी की जैविक क्रियायें तेज हो जाती हैं।
- ✓ मिट्टी उर्वरता अच्छी होने से पौधों को सभी पोषक तत्व आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं।

हरी खाद परिचय –

कृषि में हरी खाद (green manure) उस सहायक फसल को कहते हैं जिसकी खेती मुख्यतः भूमि में पोषक तत्वों को बढ़ाने तथा उसमें जैविक पदार्थों की पूर्ति करने के उद्देश्य से की जाती है। प्रायः इस तरह की फसल को हरी स्थिति में ही हल चलाकर मिट्टी में मिला दिया जाता है। हरी खाद से भूमि की उपजाऊ शक्ति बढ़ती है और भूमि की रक्षा होती है।

